



वैदिक ज्योतिष में, एक योग (Yoga - जिसका शाब्दिक अर्थ "मिलन" या "जुड़ना" है) ग्रहों का एक विशेष संयोजन, स्थिति या परस्पर दृष्टि संबंध है जो किसी व्यक्ति के जीवन में एक स्पष्ट और पूर्वानुमेय परिणाम उत्पन्न करता है।

यद्यपि अलग-अलग ग्रहों की स्थितियाँ बुनियादी व्यक्तित्व लक्षणों को दर्शाती हैं, लेकिन योग बल-वर्धक (force multipliers) के रूप में कार्य करते हैं - वे यह तय करते हैं कि किसी कुंडली की छिपी हुई क्षमता वास्तव में असाधारण सफलता, धन, आध्यात्मिक ज्ञान या अप्रत्याशित कठिनाई के रूप में प्रकट होगी या नहीं।

इसकी प्रक्रिया: योग कैसे बनता है

एक योग तब बनता है जब दो या दो से अधिक ग्रह इनके माध्यम से एक विशिष्ट संबंध बनाते हैं:

- युति (Conjunction):** एक ही भाव में एक साथ स्थित होना।
- परस्पर दृष्टि (Mutual Aspect - Drishti):** कुंडली में एक-दूसरे के ठीक सामने देखना (जैसे, एक-दूसरे से 7वें भाव में होना)।
- परिवर्तन (भावों का आदान-प्रदान):** ग्रह 'क' का ग्रह 'ख' की राशि में बैठना जबकि ग्रह 'ख' ग्रह 'क' की राशि में बैठा हो।
- भाव स्वामियों का संयोजन (House Ownership Alignment):** किसी भाव के स्वामी का किसी विशिष्ट भाव में स्थित होना (जैसे कि केंद्र/त्रिकोण का संबंध)।

योगों की प्रमुख श्रेणियाँ

वैदिक ज्योतिष में सैकड़ों शास्त्रीय योग हैं, जिन्हें उनकी मुख्य फल-प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत किया गया है; यहाँ मैं कुछ प्रमुख योगों का उल्लेख कर रही हूँ:

1. राज योग (पद और प्रतिष्ठा के संयोजन)

राज योग अधिकार, प्रशासनिक शक्ति, सामाजिक मान-सम्मान और नेतृत्व क्षमता प्रदान करते हैं।

- निर्माण:** यह तब बनता है जब केंद्र भाव (1ला, 4था, 7वां या 10वां - कर्म के भाव) का स्वामी त्रिकोण भाव (1ला, 5वां या 9वां - उद्देश्य और भाग्य के भाव) के स्वामी के साथ युति करता है या भावों का आदान-प्रदान करता है।

2. धन योग (समृद्धि के संयोजन)

धन योग वित्तीय संचय, आय के स्रोतों, संपत्ति निर्माण और समृद्धि का संचालन करते हैं।

- निर्माण:** यह प्रथम भाव (स्वयं), द्वितीय भाव (संचित धन), पंचम भाव (सट्टा और आकस्मिक लाभ), नवम भाव (भाग्य) और एकादश भाव (आय और लाभ) के बीच विशेष संबंधों से बनता है।

3. पंच महापुरुष योग (पाँच महान मानवीय योग)

यह योग केवल गैर-प्रकाशमान ग्रहों (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) द्वारा तब बनता है जब वे किसी केंद्र भाव (1ले, 4थे, 7वें या 10वें) में अपनी स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होते हैं:

- रुचक योग (मंगल):** शारीरिक ऊर्जा, साहस, नेतृत्व और खेल/सैन्य कौशल।
- भद्र योग (बुध):** उच्च बुद्धि, तीक्ष्ण संवाद शैली, व्यापार में दक्षता और विश्लेषणात्मक प्रतिभा।

- **हंस योग (गुरु):** आध्यात्मिक ज्ञान, सत्यनिष्ठा, उच्च पद और ईश्वरीय कृपा।
- **मालव्य योग (शुक्र):** आकर्षण, कलात्मक प्रतिभा, विलासिता, वैवाहिक सौहार्द और सम्मोहक व्यक्तित्व।
- **शश योग (शनि):** गहन अनुशासन, संगठनात्मक दक्षता, राजनीतिक अधिकार और सहनशक्ति।

4. नाभास और चंद्र योग (मन और व्यक्तित्व)

- **गजकेसरी योग:** यह तब बनता है जब गुरु, चंद्रमा से केंद्र भाव (1ले, 4थे, 7वें, 10वें) में हो। यह दीर्घकालिक प्रतिष्ठा, बुद्धिमत्ता और सुरक्षात्मक कृपा प्रदान करता है।
- **सूर्य/चंद्र योग (जैसे, बुधादित्य योग):** यह तब बनता है जब सूर्य और बुध एक ही भाव में युति करते हैं, जिससे बौद्धिक प्रखरता और प्रशासनिक क्षमता प्राप्त होती है।

5. अरिष्ट और दरिद्र योग (चुनौतीपूर्ण संयोजन)

- **दरिद्र योग:** यह तब बनता है जब धन भावों के स्वामी (द्वितीय और एकादश) अत्यधिक पीड़ित हों या दुस्थान भावों (6ठे, 8वें या 12वें) में स्थित हों, जिससे वित्तीय अस्थिरता आती है।
- **विपरीत राज योग:** यह "आपदा में अवसर" जैसा एक अनूठा योग है, जो तब बनता है जब त्रिक भावों (6ठे, 8वें, 12वें) के स्वामी अन्य त्रिक भावों में ही स्थित हों, जिससे बाहरी संकट अचानक व्यक्तिगत सफलता में बदल जाते हैं।

योग की शक्ति के मूल्यांकन के 3 नियम

आपकी जन्म कुंडली में किसी योग का होना स्वतः ही उसके शुभ परिणामों की गारंटी नहीं देता है। एक ज्योतिषी तीन अत्यंत महत्वपूर्ण कारकों का मूल्यांकन करता है:

1. **दशा सक्रियण:** कोई भी योग तब तक निष्क्रिय रहता है जब तक कि उसमें शामिल ग्रहों की दशा (ग्रह अवधि) या अंतर्दशा शुरू न हो जाए।
2. **ग्रहों का बल:** योग बनाने वाले ग्रह अस्त (सूर्य के अत्यधिक निकट), नीच राशि में या राहु/केतु/शनि से अत्यधिक पीड़ित नहीं होने चाहिए।
3. **लग्न अनुकूलता:** योग बनाने वाले ग्रहों को आपके विशिष्ट लग्न (Ascendant) के लिए स्वाभाविक रूप से कारक (Functional Benefic) होना चाहिए।

<https://astroarpitanath.com/hindi/yogas-in-vedic-astrology/>

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।